UNIT – II (A)

Classification of urban centers: Views of mum ford and Griffith Taylor

नगरीय केंद्रों का वर्गीकरण : मर्म फोर्ड और ग्रिफिथ टेलर के विचार

- नगर के उत्थानऔर विकास के चक्र का वैज्ञानिक विश्लेषण अनेक विद्वानों द्वारा किया गया है | जिसमें पैट्रिक गेडीस, मम फोर्ड, ग्रिफिथ टेलर आदि के कार्य या वर्गीकरण बड़े महत्वपूर्ण माने जाते हैं | पैट्रिक गेडिज ने नगर के विकास व पतन की 6 अवस्थाओं का वर्णन किया | जी. टेलर ने 1953 में बताया था कि नगरों का भी एक ' जीवन चक्र ' होता है| प्रत्येक नगर किसी विशिष्ट युग की सांस्कृतिक अवस्था और सभ्यता की दशा को प्रकट करता है| यह भी संभव है कि एक नगर निम्न में से किसी एक अवस्था में होकर नहीं भी गुजरे |

ग्रिफिथ टेलर के अनुसार (According to Grifith Taylor) :- इन्होंने नगरीय केंद्रों के विकास के वर्गीकरण की सात अवस्थाएं बताई जो निम्न प्रकार है :-

1. पूर्व शैशवावस्था (Sub-infantile stage)
2. शैशवावस्था (Infantile stage)
3. बाल्यावस्था (Juvenile stage)
4. किशोरावस्था (Adolescent stage)
5. प्रौढ़ावस्था (Mature stage)
6. उत्तर प्रौढ़ावस्था (Late-Mature stage)
7. वृद्धावस्था (Senile / Old stage)

- 1.पूर्व शैशवावस्था (Sub-Infantile stage) ;- यह वह अवस्था है जिसमें एक गली अथवा सड़क के दोनों और मकान व दुकान बनने लगते हैं मकानों के अंदर ही दुकानें बन जाती है| ऐसे नगर बस बस अड्डा और रेल मार्गों के आस-पास बनने लगते हैं |

- 2. शैशवावस्था (Infantile stage) :- इस अवस्था में गलियों व सड़कों का कुछ सुधरा रूप दिखाई देने लगता है तथा बस्ती बढ़ने लगती है| हमारे देश में प्रमुख मार्गों के किनारे स्थित ग्रामीण बस्तियों इसका स्पष्ट उदाहरण है |

- 3. बाल्यावस्था (Juvenile stage) :- इस अवस्था में मुख्य सड़क के दोनों किनारों पर गलियों का निर्माण शुरू हो जाता है| इन गलियों का मुख्य प्रयोजन वहां के मकानों में रहने वालों के आने-जाने की सुविधा के लिए होता है|

- 4. किशोरावस्था (Adolescent stage) :- इस अवस्था में नगर में विभिन्न प्रकार के मकान दिखलाई देने शुरू हो जाते हैं| नगर का व्यापार क्षेत्र अपना अलग से स्थान बना लेता है |
- 5. प्रौढ़ावस्था (Mature stage) : - नगर की इस अवस्था में प्रत्येक क्षेत्र में विभिन्नता आ जाती है| रिहायशी क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र , व्यवसाय क्षेत्रों का पृथक्करण स्पष्ट दिखाई देने लगता है | मकानों की ऊंचाई बढ़ने लगती है |
- 6. उत्तर प्रौढ़ावस्था (Late-Mayure stage) :- इस अवस्था से नगर का विकास योजना के अनुसार होने लगता है| मकानों का निर्माण निर्धारित सड़कों के सहारे किया जाता है| उद्योगों का विकास एक निर्धारित स्थान पर होने लगता है| मकानों को नए-नए डिजाइनों के अनुसार बनाया जाता है| दिल्ली, मुंबई, आगरा, कानपुर आदि इसी प्रकार के नगर है| टोकियो, लंदन, मास्को, शंघाई को भी इसी श्रेणी में रखा जाता है|
- 7. वृद्धावस्था (Senite / old stage) :- यह नगर की अंतिम अवस्था है| नगर अब उजड़ने लगता है | कुछ मोहल्ले, जन - सुनन होने लगते हैं| लोगों की भीड़- भाड़ केवल मुख्य सड़क के आस-पास ही दिखाई देती है| चित्तौड़, कन्नौज, फर्रुखाबाद नगरों को इस श्रेणी में रखा जाता है | इरफान(ईरान), थेवस (अफ्रीका), समरकंद नगर(मध्य एशिया) आदि इसी श्रेणी के उदाहरण है |

ममफोर्ड के (L. Mumford) अनुसार :-

इन्होंने अपनी पुस्तक “ The Culture of Cities “ 1938 में नगरों के प्राचीन काल में उद्भव से लेकर आधुनिक स्वरूप में विकसित होने की अवस्था (अर्थात सामाजिक वातावरण को ध्यान में रखते हुए) के आधार पर नगरों के विकास की 6 अवस्थाएं बताई है जो निम्न प्रकार है-

1. इयोपोलिस (Eopolis)
2. पोलिस (Polis)
3. मेट्रोपोलिस (Metropolis)
4. मेगालोपोलिस (Megalopolis)
5. टायरनोपोलिस (Tyranopolis)
6. नैक्रोपोलिस (Nekropolis)

1. इयोपोलिस (Eopolis) :- यह अवस्था मानव की आदिम अवस्था से सभ्यता की दिशा में प्रथम कदम रखने का परिचय कराती है | जिसमें पशुपालन तथा कृषि संबंधी कार्यों का विकास प्रारंभ होता हुआ दिखाई देता है | यहां पर पाषाण युगीन संस्कृति देखने को मिलती है | इसमें छोटे , बड़े व केंद्रीय गांव का भी विकास हुआ| इन गांव में शिक्षा ,संस्कृति, कला आदि का भी विकास हुआ | इन गांव को ग्रागर (Rurban) भी कहा जाता है

2. पोलिस (Polis) :- पोलिस का अर्थ यहां कस्बा से है | गांव का रूप कस्बे के रूप में परिवर्तित हो जाता है| यहां पर व्यापारिक गतिविधियों का विकास, साप्ताहिक बाजार, श्रम विभाजन आदि का विकास हुआ | मनोरंजन व शिक्षा- कार्यों का विकास हुआ | संगीत, चित्रकला आदि कलाओं की सृष्टि हुई | नगरीय विचारों व भावनाओं का विकास हुआ | भवन व शिल्प कला की उन्नति हुई पोलिस (कस्बे) व गांव के बीच यातायात, संचार और परिवहन द्वारा संपर्क शुरू हो गई | आवासीय क्षेत्रों में सड़कों व गलियों का निर्माण हुआ |

3. मेट्रोपोलिस (Metropolis) :- इस अवस्था तक पहुंचते-पहुंचते नगर अपने आस-पास के नगरों से बड़ा हो जाता है | किसी देश या राज्य की राजधानी भी हो सकते हैं तथा जिनमें उद्योग , व्यापार, व्यवसाय क्रियाएं , वाणिज्य, यातायात मार्ग तथा प्रशासनिक क्रियाओं का उच्च स्तर पाया जाता है | आर्थिक प्रतिस्पर्धा विकसित होने से उद्योगपतियों और श्रमिकों के मध्य संघर्ष का सूत्रपात हुआ | वर्ग संघर्ष गतिशील हुआ और अंततः महानगरीय व्यवस्था में विघटन होना आरंभ हो गया |

4. मेगालोपोलिस (Megalopolis) :- यह नगर विकास की चरम या अंतिम अवस्था होती है | जहां बहुमंजिला इमारतों पर उद्योगपतियों तथा पूंजी पतियों का एकाधिकार पाया जाता है | नगर में गंदी बस्तियों का प्रादुर्भाव (फैलाव) हो जाता है | जीवन नारकीय रूप में बदलता दिखाई देता है | पूंजीवादी व्यवस्था का प्रसार, नैतिकता का पतन, शक्ति की पूजा आदि बातों का महत्व बढ़ जाता है | कला , संस्कृति, साहित्य, शिल्प कला आदि पर पूंजीपति वर्ग का अधिकार हो जाता है | नौकरशाही विकसित हो जाती है तथा नगर विराट रूप धारण कर लेते हैं | ऐसे नगरों में मानव का शोषण युक्त जीवन विकसित होता हुआ दिखाई देता है |

5. टायरनोपोलिस (Tyranopolis) :- जब कभी शासन व्यवस्था की कमी या आर्थिक - सामाजिक कारणों से नगर का विकास अवरुद्ध हो जाता है तथा चारों और बेरोजगारी फैलने लगती है तथा नगर का हास होना प्रारंभ हो जाता है | उस अवस्था को मम फोर्ड ने टायरनोपोलिस कहा है | जहां व्यापार व वाणिज्य में दस्यु वृत्ति (चोरी- डकैती) पनपने लगती है| गांव, कस्बों, उपनगर व समीपवर्ती क्षेत्रों का शोषण प्रारंभ हो जाता है | नगर में खुले स्थानों का अभाव, मकानों की कमी, सड़क पर ट्रैफिक की अनियंत्रित भीड़- भाड़ बढ़ जाती है | इस प्रकार नगर में अनेक समस्याएं पैदा हो जाती है | नगर आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से संकट में आ जाता है |

6. नैक्रोपोलिस (Nekropolis) :- यह नगरों के विनाश या नष्ट होने की अवस्था है जिसके अंतर्गत नगर विभिन्न आर्थिक - सामाजिक या प्राकृतिक कारणों से बर्बाद हो जाता है | इस अवस्था में आकर नगर का पतन अपनी अधोगति या उच्च स्तर प्राप्त कर लेता है | यह पतन ऐसे कारणों से होता है जो मानव की शक्ति से परे होता है | नगर दुर्भिक्ष , महामारी,युद्ध आदि से प्रभावित होकर विनाश की ओर उन्मुख हो जाते हैं | ऐसी अवस्था में नगर में सड़कें वीरान नजर आती है | चारों ओर भग्नावशेष/ सुन-सान दिखाई देने लगते हैं | नगर कब्रिस्तान जैसा लगने लगता है अर्थात नगर अपनी मृत्यु/ विनाश के समीप पहुंच जाता है | अतः यह कहा जा सकता है कि यह दोनों वर्गीकरण अलग अलग है लेकिन एक दूसरे के पूरक हैं | नगर के विकास और पतन से उसका सामाजिक वातावरण भी बदल जाया करता है